Name of the College: A.P.S.M College Barauni
Name → Dr. Rajesh Kumar Suman
Designation → (HT)
Class → B.A Part-I Eco (Sub.)

Unit-01

Name of the Topic → Consumer's Surplus

⇒ आर्थिक विश्लेषण में उपभोक्ता बचत का सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। इस सिद्धान्त की सर्वप्रथम व्याख्या में एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री एवं इन्जीनियर R.J Dupit द्वारा की गयी थी। आधुनिक अर्थशास्त्री इसे क्रेता की बचत (Buyer's Surplus) के नाम से भी जानते हैं।

उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है। उपयोगिता ह्रास नियम के अनुसार किसी वस्तु की इकाईयों का प्रयोग करते जाने पर बाद में आने वाली इकाईयों की उपयोगिता पहले की इकाईयों की अपेक्षा कम होती जाती है। दूसरे शब्दों में, उपभोक्ता पहले की इकाईयों के लिए अधिक कीमत देने को तैयार रहता है। क्योंकि उनसे अधिक उपयोगिता मिलती है परन्तु बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं की सभी इकाईयों के लिए समान कीमत देता है। उपभोक्ता किसी वस्तुओं को उस कीमत तक खरीदता है जहाँ पर उससे प्राप्त होने वाली उपयोगिता किसी वस्तुओं को उस कीमत तक खरीदता है। जहाँ पर उस से प्राप्त होने वाली उपयोगिता दी जाने वाली कीमत के बराबर न हो जाय। वस्तु की एक सीमान्त इकाई के प्रयोग से उपभोक्ता को कोई बचत प्राप्त नहीं होती है। क्यों कि सीमान्त इकाई पर उपयोगिता और अनुउपयोगिता दोनों बराबर होता है परन्तु, सीमान्त इकाई के पहले की इकाईयों में से प्रत्येक उपयोगिता कीमत से अधिक होती है। इस प्रकार, उपभोक्ता को सीमान्त इकाईयों से पहले की इकाईयों पर एक प्रकार की बचत का अनुभव होता है, जिसे उपभोक्ता की बचत (Consumer's Surplus) कहते हैं।

⇒ उपभोक्ता की बचत को इस प्रकार परिभाषित किया है।

(i) प्रो मार्शल के अनुसार:- "किसी वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उपभोक्ता जो कीमत देने के लिए तत्पर रहता है तथा वास्तव में, जो कीमत देता है, उसके अन्तर को 'उपभोक्ता की बचत' कहते हैं।"

(ii) टॉजिग के अनुसार:- "समग्र तुष्टिगुण और समग्र विनिमय कीमत के मापने वाली राशियों का अन्तर ही उपभोक्ता की बचत है।"

(iii) प्रो. जे. के. मेहता के अनुसार:- "किसी वस्तु से मनुष्य जो उपभोक्ता की बचत प्राप्त करता है वह उस वस्तु से मिलने वाली सन्तुष्टि तथा उसे प्राप्त करने के लिए त्यागी गई सन्तुष्टि का अन्तर है।"

उपयुक्त परिभाषाओं के आधार पर उपभोक्ता की बचत की सरलतम परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है। "उपभोक्ता किसी वस्तु या सेवा के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा उस वस्तु या सेवा के लिए जो मूल्य देने को तैयार है और जो मूल्य वास्तव में वह देता है, उन दोनों का अन्तर ही "उपभोक्ता की बचत" है।"

> उपभोक्ता की बचत = कीमत जो हम देने को तैयार है − कीमत जो हम वास्तव में देते हैं।

Scanned with CamScanner